

# Wildlife Poetry Writing Competition



1st position:

**AAYUSHI SAHAY**  
BSc (H) Botany 2nd year



## वन्य जीवन संरक्षण

-आयुशी सहाय

विराट वनों की अखंडित खामोशी  
आज मासूम जीवों के स्वरो से विहीन है  
वहां विलुप्त हो रही है जैव - विविधता  
यहां जग कंक्रीट - निर्माण में लीन है  
वनाग्नि की कालिमा हरियाली को निगल रही है  
वन्य जीवों के कराह से, मां वसुंधरा भी सिहर रही है  
धूमिल हैं वे पदचिन्ह सभी, मृत्तिका सूनी पड़ी है  
स्वार्थता में प्रकृति का शोषण, क्या बर्बरता नहीं है  
जीवहत्या की उद्दंडता कर, मानव ने रक्तपान किया है  
सर्वोच्चता की आड़ में निष्ठुरता का प्रमाण दिया है  
बेसहारा भटकते हैं वो अपने अस्तित्व के तलाश में  
बिछुड़ चुके हैं परिजनों से, संग थे कभी जो पलाश में  
अपने अंशों की दुर्गति पर प्रकृति विलाप कर रही है  
यंत्रणाओं पर प्रतिक्षण ममता का आवरण धर रही है  
प्रकृति-शोषण, विलुप्त वन्यजीवन से जो असंतुलन लाएगा  
उसके अचूक प्रहार से सर्वनाश हो जाएगा  
भक्षण से रक्षण के पथ पर चलना ही समझदारी है  
मत भूल ए मूर्ख मानव, तू इस प्रकृति का आभारी है  
न होता जो वन्यजीवन तो खाद्यश्रृंखला बिखर जाती  
क्रमागत उन्नति की शाखा में तेरी बारी न आती  
लें शपथ सब मिल, संभव हो सतत विकास  
वन्य जीवन रक्षण का हो आगाज़  
राष्ट्रीय उपवनों व हरित वनों में उनका संरक्षण हो  
स्वच्छंदता हो, सुरक्षा भी, नित अविरत पोषण हो  
वन - नीतियों से, वन - समुदायों की वृद्धि हो  
अवैध शिकार-सी गतिविधियों पर सख्त पाबंदी हो  
वृक्षारोपण, अभ्यारण्यों से उनका कल्याण करें  
करें न्योछावर प्रेम, सभी वन्यजीव न का सम्मान करें.

# Wildlife Poetry Writing Competition

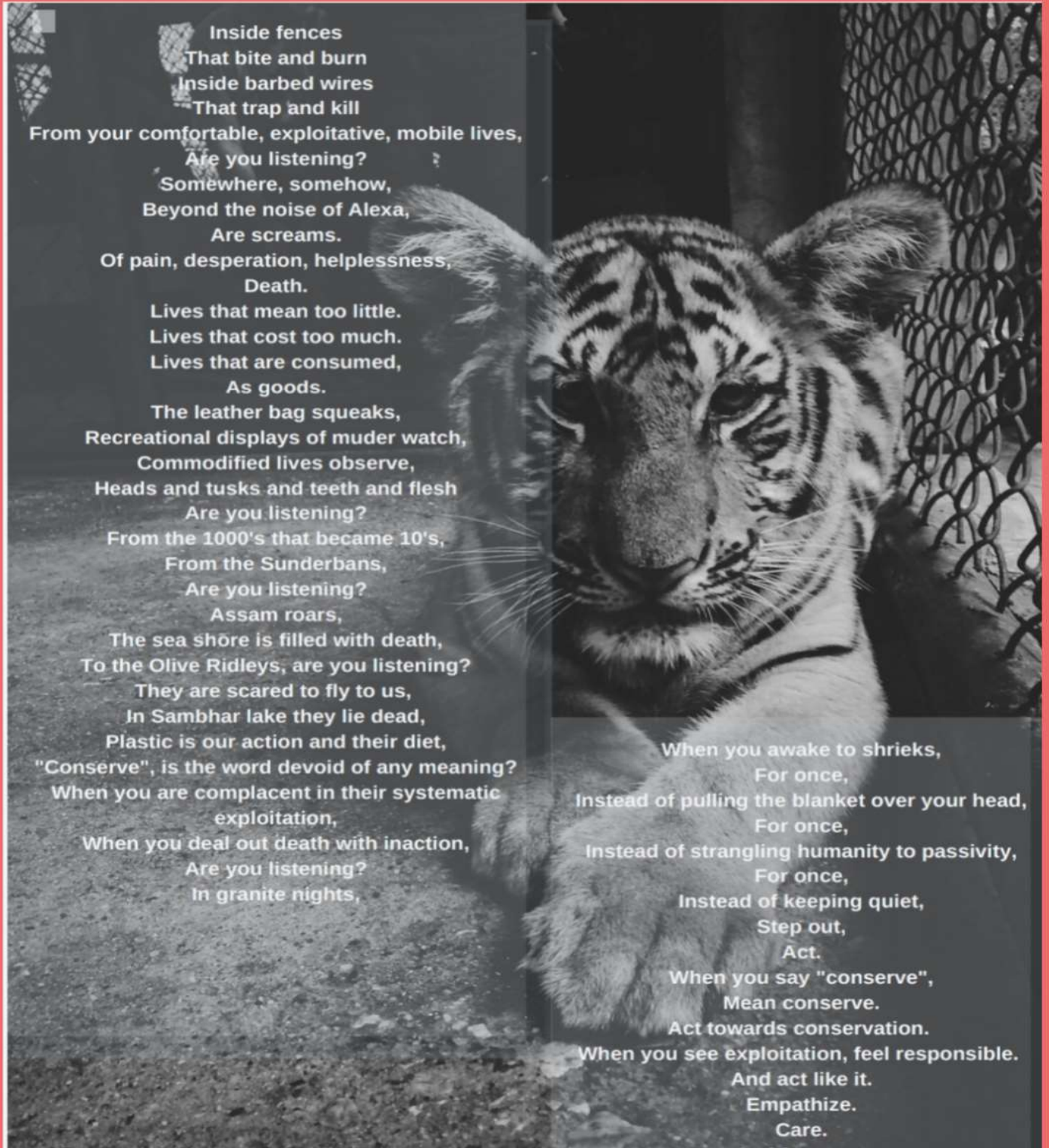


1st position:  
**ANUSHKA TIWARI**  
**BA(H) English, 3rd year**



Inside fences  
That bite and burn  
Inside barbed wires  
That trap and kill  
From your comfortable, exploitative, mobile lives,  
Are you listening?  
Somewhere, somehow,  
Beyond the noise of Alexa,  
Are screams.  
Of pain, desperation, helplessness,  
Death.  
Lives that mean too little.  
Lives that cost too much.  
Lives that are consumed,  
As goods.  
The leather bag squeaks,  
Recreational displays of milder watch,  
Commodified lives observe,  
Heads and tusks and teeth and flesh  
Are you listening?  
From the 1000's that became 10's,  
From the Sunderbans,  
Are you listening?  
Assam roars,  
The sea shore is filled with death,  
To the Olive Ridleys, are you listening?  
They are scared to fly to us,  
In Sambhar lake they lie dead,  
Plastic is our action and their diet,  
"Conserve", is the word devoid of any meaning?  
When you are complacent in their systematic  
exploitation,  
When you deal out death with inaction,  
Are you listening?  
In granite nights,

When you awake to shrieks,  
For once,  
Instead of pulling the blanket over your head,  
For once,  
Instead of strangling humanity to passivity,  
For once,  
Instead of keeping quiet,  
Step out,  
Act.  
When you say "conserve",  
Mean conserve.  
Act towards conservation.  
When you see exploitation, feel responsible.  
And act like it.  
Empathize.  
Care.



# Wildlife Poetry Writing Competition



2nd position:

**GITANJALI SHARMA**  
**BSc(H) Botany, 2nd Year**



## केरला में मारी गई हथिनी के गर्भ में पल रहे बच्चे की आवाज

मां काश हम आज गांव ना जाते  
तो खाने की आड़ में दी गई भयावय मौत ना पाते  
याद है वह पल मुझे मां,  
जब तू खाने को देखकर खिलखिला उठी थी  
अपनी नहीं पर मेरी फिकर जो तुझे सता रही थी  
कहा था तूने हमें खाना देने वाले भगवान हैं  
तू उनकी इंसानियत से उत्सुक उनकी हैवानियत से अनजान थी  
हम जानवरों से डरने का प्रपंच करके,  
अपने इंसान होने पर घमंड करते हैं वह लोग  
जानवरों की परिभाषा को शायद समझते नहीं वह लोग।



**by Gitanjali**  
**Sharma** *R.o.p*

उनके लिए यह बस एक खेल था,  
पर तेरा दिल तो ममता से सराबोर था

ना जाने कितनी पीडा सही थी तूने,  
कितनी तड़पी कितनी बेचैन हुई थी तू

फिर भी मेरे जन्म के लिए आखिरी सांस तक लड़ी थी तू

मेरे लिए कुछ सपने थे तेरे,  
मेरे रूप को अपनी आंखों से बना था तूने  
तेरे जैसे नैन - नक्श चाहे थे तूने,  
आयु कहकर पुकारती थी तू मां  
हर पल में मेरे आने के सपने बुनती,  
मेरे आने के इंतजार में पलके बिछाए थी तू मां  
वह मूर्ख क्या जाने पीडा तेरी  
तू मेरी ईश्वर मेरी मां।

काश बंद कर दें यह विनाश अब यह इंसान,  
हमें भी जीने दे वह अपने साथ  
काश फिर कोई मां ऐसे ना रोए  
काश फिर कोई बच्चा अपनी मां को देखे बिना सोए


काश फिर कोई आयु अल्पायु ना होए।।

# Wildlife Poetry Writing Competition



2nd position:

**OJASWITA PANT**  
**BSc.(H) Chemistry, 3rd year**



## An Appeal....

I left my house in search of food,  
Returned back to witness it all removed.  
Stunned and helpless at the sight,  
I became homeless in the middle of the night.

I blame you humans for demolishing my  
abode,  
In order to fulfil your inner lure,  
My dwelling is now a cage,  
Alas! I am not ready for this  
massive change.

No environment of comfort,  
No food of my choice,  
I keep reminiscing my early days and rejoice.

My species will suffer in multitude,  
As a consequence of your negligent attitude.  
One day even I will become extinct,  
And then my existence will become indistinct.

So before my comrades become a mere show at the zoo,  
Asiatic Lions and Indian Leopards to name a few.  
Stop the rapid tearing down of our environment,  
Nurture our home and adopt alternative  
methods of development.  
Pledge to save our forest,  
To put an end to this unrest.

~ Ojaswita Pant

# Wildlife Poetry Writing Competition



3rd position:

**RAVEENA KUMARI**  
BSC (H) CHEMISTRY 2ND YEAR



## मत काटो यूँ बेदर्दी से मुझे, मुझे थोडा-सा जी लेने दो...

समझना और समझाना कैसा, किस को समझाऊँ मैं  
खूबसूरत है कितनी ये दुनिया, जिसमे टिमटिमाऊँ मैं  
बस जाना है गर्द में इसके, कैसे ये झुठलाऊँ मैं  
कैसी कैसी तबाही आएगी, कैसे ये बतलाऊँ मैं  
अरे रुको, हवा का ज़हर थोडा-सा पी लेने दो  
मत काटो यूँ बेदर्दी से मुझे, मुझे थोडा-सा जी लेने दो...

खुश नसीब हूँ मैं, जो मुझे पर इतना भार है आया,  
हर मौसम मुझ से, बारिश का त्योहार जो लाया,  
खुशबू भी मेहकती मुझ से, फूलों का संसार जो पाया,  
भाँवरे का शांत संगीत, हर राही को देता ठंडी छाया,  
अरे रुको, हवा का ज़हर थोडा-सा पी लेने दो,  
मत काटो यूँ बेदर्दी से मुझे, मुझे थोडा-सा जी लेने दो...

हर तरफ़ हो शुद्ध हवा, इतना-सा बस  
लक्ष्य मेरा,  
जीने का अधिकार है सबको, पंछियों  
का मैं हूँ बसेरा,  
चिंगारी तो जलानी पड़ेगी, तभी जा  
कर होगा दुर अँधेरा,  
दुनिया जायेगी उझड़, कालिए क्या  
होगा तेरा ...

अरे रुको, हवा का ज़हर थोडा-सा पी  
लेने दो,  
मत काटो यूँ बेदर्दी से मुझे, मुझे  
थोडा-सा जी लेने दो..

- रवीना कुमारी



# Wildlife Poetry Writing Competition



3rd position:

**ANUSHKA DAYAL**



**BSc Life Sciences  
2nd year**

**TWEET  
TWEET**

Shh! They Are Here.  
Hold Your Footsteps And Beware.  
If You Dare To Creak Or Shout,  
They Are Never Ever Going To Come About.  
For They Know We Are Not Fair  
And Come And Catch Them Any Place And Anywhere.

Peeking Through The Window,  
I Stand In All Solace To Admire The Nature  
And Her Beautiful Creature.  
Look! At The Plume,  
It Shimmers With Blue, Purple, Red, Yellow Hues.  
They Glimmer In Light And Are One Of The Most  
Magnificent Creatures That Ever Come Across Our Sight.

I Call Out My Sis To Look At These Little Fellas,  
Perching On Our Balcony, Gathering For Their Gala.  
Munching On Puris And Chana,  
A Feasty Meal Prepared By My Mama.

Mango Tree Their Shelter And Bignonia Their Swing,  
They Swish And Swirl All About Their Territory  
As They Sing.

Cuckoos, Mynas And Bulbuls Grace The Occasion  
As They Alight On The Bignonia Branch With  
Their Majestic Plume And Crowns,  
And Mesmerize Us,  
As They Swoop Down And Circle Around.

Kooh-kooh, Twitter, Tweet, Cheep-cheep Are The Sounds  
Belonging To Some Other Dimension,  
Soothes My Soul And Mind And Kills Away All The Tension.

Stuck In The Reverie Of Birds,  
I Am Slowly Awakened As My Mother Calls Me  
To Do Some Household Chores,  
I Retreat Steadily Away From The Window  
Leaving Behind My Friends Enjoying Themselves A Little More.

- Anushka Dayal